

ماہنامہ  
شعاعِ حسن  
نومبر ۲۰۱۷ء  
لکھنؤ

قَالَ اللَّهُ تَبَارَكَ وَتَعَالَى قَدْ جَاءَكُمْ مِنَ اللَّهِ نُورٌ وَكِتَابٌ مُبِينٌ  
بے شک تمہارے پاس اللہ کی طرف سے نور آیا ہے اور روشن کتاب



نور ہدایت فاؤنڈیشن، حسینہ غفران مااب، چوک، لکھنؤ-۳

R.N.I NO. UPBIL/2004/13526  
Postal Regd. No. SSP/LW/NP-75/2017-19 Dispatch Date: 2 & 6 of Every Month

Annual Rs. 200/- November 2017 Per Copy- Rs.25/-

# شुआ-ए-अमल

हिन्दी, उर्दू मासिक पत्रिका लखनऊ



خلاق مضامین ماہر فن نواب مولانا سید مہدی حسین نقوی ماہر اجتہادی  
ولادت ۱۲۶۳ھ وفات ۱۶ ربیع الثانی ۱۳۲۵ھ مطابق ۲۹ مئی ۱۹۰۷ء



Lucknow

**NOOR-E-HIDAYAT FOUNDATION**

Imambara Ghufraan Maab, Chowk, Lucknow-3 (U.P.) INDIA, Ph.:0522-2252230

Per Copy 25/-  
Annual 200/-

बिस्मिल्ली तअला

ISSN 2456-8384

वर्ष  
14

अंक  
5

न्यास संस्थापन

15 जमादिलउला 1424 हि० / 16 जुलाई 2003 ई०

पत्रिका विमोचन

15 जमादिलउला 1425 हि० / जुलाई 2004 ई०

पर्यवेक्षक:

मु० र० आबिद, गोलागंज लखनऊ

सलाहकार समिति

- प्रोफेसर अल्लामा अली मुहम्मद नकवी, अलीगढ़
- डॉ० महदी ख्वाजा पीरी, ईरान
- मौलाना हसन जफर नकवी, कराची
- कैप्टन सिकन्दर रिजवी, लखनऊ
- प्रोफेसर हुसैन कमालुद्दीन अकबर, इलाहाबाद
- डॉ० अरशद अली जाफरी, लखनऊ
- शायरे अहलैबैत रजा सिरसिवी, सिरसी
- सै० सैफ तकी नकवी, दिल्ली
- मुहम्मद आलिम, हुसैनाबाद, लखनऊ

नूरे हिदायत फाउण्डेशन के

इस्लामी, ज्ञान व शोध

हिन्दी, उर्दू मासिक पत्रिका

नवम्बर—2017 ई०

शुआ-ए-अमल

“लखनऊ”

संरक्षक

काएदे मिल्लत प्रोफेसर मौलाना सै० कल्बे जवाद नकवी साहब

माननीय नवाब रजा साहब, भोपाल

माननीय सै० अहमद अब्बास नकवी साहब, मुम्बई

सम्पादक

सै. मुस्तफा हुसैन नकवी ‘असीफ’ जायसी

उप-सम्पादक

कायम महदी नकवी ‘तजहीब’ नगरौरी

आसिफ अब्बास नौगांवी

मिलने का पता

नूरे हिदायत फाउण्डेशन

इमामबाड़ा हज़रत गुफ़रानमआब, मौलाना कल्बे हुसैन रोड, चौक, लखनऊ - 3

Phone No: 0522-2252230

Mobile No: 08736009814 — 09335996808

प्रकाशक मुद्रक: सैय्यद मुस्तफा हुसैन नकवी द्वारा स्वामी एस कल्बे जवाद नकवी के लिए निजामी प्रेस विक्टोरिया स्ट्रीट अपोजिट हसनैन मार्केट, चौक, लखनऊ (उ० प्र०) से मुद्रित तथा नूरे हिदायत फाउण्डेशन, इमामबाड़ा गुफ़रानमआब, मौलाना कल्बे हुसैन रोड, चौक लखनऊ (उ० प्र०) से प्रकाशित।

सम्पादक: सैय्यद मुस्तफा हुसैन नकवी

नवम्बर—2017

मासिक “शुआ-ए-अमल” लखनऊ

3

## सम्पादन समिति

- ⇒ डॉ० अमानत हुसैन नकवी
- ⇒ हैदर अब्बास नकवी, इलाहाबाद
- ⇒ अमील शम्सी, लखनऊ
- ⇒ वासिफ अहमद नकवी 'समीर'
- ⇒ महदी रज़ा
- ⇒ शाहिद अली आजमी
- ⇒ जुलफ़ेकार हैदर आजमी
- ⇒ अलहाज मिर्ज़ा हुमायूँ क़दर
- ⇒ डॉ० आरिफ़ अब्बास
- ⇒ रेहान आलम, लखनऊ
- ⇒ सलमान हुसैन, लखनऊ
- ⇒ बिनते ज़हरा 'नदल हिन्दी'
- ⇒ अलहाज फ़रीद महदी रिज़वी

- ज़फ़र हुसैन रिज़वी ब्यूरोचीफ़ मुम्बई
- इरफ़ान हैदर, ब्यूरोचीफ़ मध्यप्रदेश
- कैफ़ तकी नकवी, ब्यूरोचीफ़ देहली

R.N.I. No.  
UPBIL/2004/13526

▼▼▼  
Postal Regd. No.  
SSP/LW/NP-75/2017-2019

### WEBSITE:

www.noorehidayatfoundation.org  
www.naqeeblucknow.com

### E\_mail:

noorehidayat@yahoo.com  
noorehidayat@gmail.com  
shuaeamallucknow@gmail.com

## वार्षिक अंशदान

- 1- एक साल के लिए 200/-
- 2- पांच साल के लिए 800/-
- 3- लाईफ़ मिम्बरशिप 5000/-

# विषय सूची

नवम्बर 2017 ई०  
सफ़रुल मुज़फ़्फ़र 1439 हि०

नं०	लेख व लेखक	पृष्ठ
1.	शहीदे इन्सानियत (किस्त-8) आयतुल्लाहिल उज़्मा सैय्यदुल उलमा सै० अली नकी नकवी	5
2.	पैग़म्बर का अख़्लाक़ आयतुल्लाहिल उज़्मा सैय्यदुल उलमा सै० अली नकी नकवी	14
3.	मुख्य समाचार इदारा	17

मासिक

# “शुआ-ए-अमल”

(हिन्दी-उर्दू)

## “ख़ानदाने इज्तेहाद नम्बर”

### दैनिक नकीब लखनऊ

और नूरे हिदायत फ़ाउण्डेशन से प्रकाशित  
सभी किताबों को डाउनलोड करने के लिए  
लॉग आन करें हमारी वेबसाइट

**Log on Our Website:**

www.noorehidayatfoundation.org,  
www.naqeeblucknow.com

## शहीदे इन्सानियत

आयतुल्लाहिल उजमा सैय्यदुल उलमा मौलाना सै० अली नकी नक्वी ताबा सराह

एबादा बिन सामित (मशहूर सहाबी) के साथ भी सोने की बैअ व शरा (खरीदो फ़रोख़्त) के मुआमले में इसी तरह का किस्सा हुआ था और मुआविया ने उनको भी यही जवाब दिया था कि हम इसको किसी तरह बुरा नहीं समझते। एबादा ने कहा मैं तो रसूले खुदा का हुक्म बयान करता हूँ और तुम अपनी राय बयान करते हो। खुदा मुझे इस जगह से निकाले मैं इस सरज़मीन पर हरगिज़ न रहूँगा जिस पर तुम हाकिम हो।<sup>1</sup>

इससे मालूम होता है कि एक कशमकश दमिश्क की सियासत और परस्ताराने शरीअत में उस वक़्त से शुरू हो गई थी।

इसकी एक और मिसाल मुलाहेज़ा हो। अब्दुर रहमान बिन सहल अन्सारी तीसरी ख़िलाफ़त के दौर में एक ज़ेहाद के सिलसिले में शाम की तरफ़ गए तो उन्होंने देखा कि ऊँटों पर शराब की मशकें भरी हुई जा रही हैं। वह आगे बढ़े और उन्होंने अपने नैज़े से उन मशकों को चाक कर दिया। गुलामों ने मज़ाहमत (रोकने की कोशिश) की और यह ख़बर मुआविया को पहुँचाई। उन्होंने कहा छोड़ो उस बूढ़े को। उसकी अक्ल जाती रही है। अब्दुर रहमान ने कहा मेरी अक्ल नहीं गई है मगर रसूल अल्लाह<sup>स०अ०</sup> ने हमको मुमानेअत (मना) फ़रमाई है कि शराब हमारे शिकमों (पेटों) और हमारे ज़ुरुफ़ (बर्तनों) में दाख़िल न हो।<sup>2</sup>

1 सुनन इब्ने माजा जि/1, पेज/7

2 एसाबा जि/2, पेज/401, असदुल गाबा जि/3, पेज/299

इन्हीं बातों का नतीजा था कि इन सिन रसीदा अफ़राद को जो सहाब-ए-रसूल में महसूब (शुमार) होते थे मुआविया से तनफ़ूर (नफ़रत) पैदा हो गया था। चुनानचे एक दफ़ा ऐसा हुआ कि मुआविया अहले शाम की एक जमाअत के साथ जबकि वह मक्क-ए-मुअज़्ज़ेमा हज को गए हुए थे सुबह सवेरे सअद बिन अबी विकास की तरफ़ से गुज़रे। उन्हें सलाम किया मगर सअद ने सअद हैं। हज़रत रसूल<sup>स०अ०</sup> के सहाबी। उनका उसूल है कि सूरज तालेअ (निकलने) होने तक किसी आदमी से बात नहीं करते। सअद को यह ख़बर मालूम हुई। कहा इसकी कोई असलियत नहीं मगर ब-ख़ुदा मैं ने इस से बात करना पसन्द न की।<sup>3</sup>

उसके बाद सलतनते दमिश्क जितनी ताक़तवर होती गई उतना ही उसने इस्लामी तमद्दुन (तहज़ीब) के बजाये दुनिया-दाराना तमद्दुन को फ़रोग़ दिया। जिसका नतीजा यह था कि इस्लामी क़द्रो कीमत के मेयार और वह इम्तेयाज़ात ख़त्म हो गए जो इस्लाम के सादा और ग़ुरबा परवर उसूल ने कायम किये थे। उसका एक नमूना है सन 30 हिजरी में हज़रत अबूज़र ग़फ़ारी का जिला वतन किया जाना। उनका एक कुसूर यह था कि वह उस सरमाया परस्ती की मज़म्मत करते थे जो उन्हें उस वक़्त इस्लामी मुल्क में नज़र आ रही थी। वह ग़रीब मुसलमानों को भूखा मरते देखते तो

3 अल वोज़ानवल किताब पेज/26

दमिश्क की गलियों में वह आयतें कुरआन की पढ़ते फिरते थे जो सरमाया परस्ती के खिलाफ हैं। वह कहते थे कि जो लोग सोना चाँदी ख़ज़ानों में जमा कर रहे हैं और उन्हें राहे खुदा में सर्फ़ नहीं करते उन्हें मुन्तज़िर रहना चाहिये उस वक़्त का कि जब आतिशे जहन्नम से उनकी पेशानियाँ, उनके पहलू और उनकी पुश्तें दागी जायेंगी।<sup>4</sup>

यह भी था कि वह हुकूमत की खुशमद नहीं करते थे बल्कि मौके पर सच्ची बात कह गुज़रते थे। चुनानचे जब मुआविया ने कस्से ख़िज़रा की तामीर की तो अबूज़र से पूछा, क्यों इसे आप कैसा समझते हैं? हज़रत अबूज़र ने फ़रमाया। अगर तुम ने इसे खुदा के माल से बनाया है तो तुमने ख़यानत की और अगर खुद अपने ज़ाती माल से बनाया है तो इसराफ़ किया।<sup>5</sup>

मिज़ाजे कैसरियत इसका मुतहम्मिल (बरदाश्त) कब हो सकता था? नतीजा यह हुआ कि उनकी शिकायत दारुस सलतनत (राजधानी) मदीने में भेजी गई और वहाँ से हिदायत हुई कि अबूज़र को मदीने रवाना कर दो।<sup>6</sup>

अबूज़र शाम से मदीना भेज दिये गए और यहाँ पहुंच कर बजाए इसके कि मुआविया को कुछ तम्बीह की जाती इस जलीलुल क़द्र सहाबी को मदीने से निकलने का हुक्म हो गया। मुसाफ़िरत और बेसरो सामानी, आस पास कोई हमदर्द कैसा, शनासा तक नहीं, आख़िर यह शदायद (तकलीफ़ें) न उठ सके। सन 33 हिजरी में दाई-ए-अजल को लब्बैक कहा। जब अबूज़र की हालत ख़राब हुई, पास सिर्फ़

बीबी और एक लड़की थी। अबूज़र ने उनको वसीयत की कि मरने के बाद तुम दोनों मिल कर मुझे गुस्ल देना, कफ़न पहनाना और फिर लाश को ले जाकर काफ़ेले की गुज़रगाह पर लिटा देना और जो काफ़ेला उधर से गुज़रे उससे कहना यह रसूले खुदा का सहाबी अबूज़र है, उसको दफ़न करा दो। चुनानचे जब उनका इन्तेक़ाल हो गया तो ग़मज़दा माँ बेटी ने उसी हिदायत पर अमल किया। लाश के साथ सरे राह आकर बैठ गई। इत्तेफ़ाक़न अब्दुल्लाह बिन मसऊद अहले इराक़ के एक काफ़ेले के हमराह जो मक्क-ए-मुअज़्ज़ेमा हज के लिए जा रहा था उधर से गुज़रे। रोती हुई ख़ातून और बच्ची को देखकर ठहर गए और दरयाफ़ते हाल किया। मुसीबत ज़दों ने कहा: “लोगो! रसूल के मज़लूम सहाबी अबूज़र ने ग़ुरबत के आलम में वफ़ात पाई। उन्हीं का लाशा है जो बेगोरो कफ़न पड़ा है। इब्ने मसऊद उनके साथी चीखें मार मार कर रोने लगे और उन्होंने अबूज़र को दफ़न किया। यह हुकूमते वक़्त की सियासत मुलूकाना के खिलाफ़ पहली कुर्बानी थी, जो रसूल के मुक़द्दस सहाबी हज़रत अबूज़र ग़फ़ारी ने पेश की।

याद रखने की बात है कि यह अबूज़र ग़फ़ारी और अब्दुर्रहमान बिन सहल अन्सारी अपनी फ़र्ज़ शनासी की बिना पर इस्लाम के कायम करदा हुदूद व इम्तेयाज़ात में बड़ी अज़मत के मुस्तहक़ थे मगर मौजूदा सियासत के हुदूद में वह बिल्कुल कम हकीक़त और बे वुक्क़अत हो गए थे। इसके मानी यह थे कि इस्लामी इन्केलाब की जगह क़दामत परस्ताना (बादशाही) इन्केलाब फ़तह पाने लगा और इस्लाम के मुक़र्रर करदा हुदूद के बजाए दूसरे हुदूद व इम्तेयाज़ात कायम हो गए।

4 तबरी जि/5, पेज/66

5 किताबुल बिलदान पेज/156

6 तबरी जि/5, पेज/66



## आठवाँ बाब

पैग़म्बरे खुदा<sup>स०अ०</sup> के बाद इस्लामी मफ़ाद के मुहाफ़िज़ीन, उनमें और मुख़ालिफ़ क़ूवतों में तसादुम और उसके नताएज।

यह एक नुमायँ हकीक़त है कि पैग़म्बरे इस्लाम के बाद पैग़म्बर के हकीकी विरसादार जो उनके अहलेबैत थे, इस्लामी इन्क़ेलाब और उसके खुसूसियात व इस्तेयाज़ात के मुहाफ़िज़ थे।

दुनिया में आलीशान महेल तामीर हो चुके थे लेकिन उनका वही छोटा सा मकान था जिसमें उन्हें पैग़म्बर ने रख दिया था। दुनिया के महल्लात में रेशमी पर्दे दरवाज़ों पर हो गए थे मगर उनके दरवाज़े पर वही फटा हुआ पर्दा अब भी नज़र आता था। दुनिया के जिस्म पर हरीर व दीबा (रेशमी लिबास) नज़र आता था लेकिन यह खद्दर का मलबूस अब भी ज़ेबतन करते थे।

दुनिया मफ़तूहा ममालिक (जीते हुए मुल्क) की दौलत से चैन करती और ऐश व इशरत में ज़िन्दगी गुज़ारती थी मगर यह अब भी अपने हाथ की मेहनत से रोज़ी कमाना और माले हलाल की तलाश करना अपना फ़र्ज़ समझते थे। और जो दौलत भी मिलती उसे ग़रीबों, मिसकीनों, बेवाओं और यतीमों की नज़र कर देते। और इस बिना पर उनमें और उसके मुतवाज़ी (मुक़ाबले) दूसरे इन्क़ेलाब के अलमबरदारों में कशमकश लाज़मी थी। हज़रत अली<sup>अ०स०</sup> से मुआविया का तसादुम जिसके बहुत से वाक़ेआत का तज़क़िरा पहले हो चुका है। इसी कशमकश का नतीजा था।

इसमें कोई शक नहीं कि इस वक़्त इसके अलावा जब भी मुक़ाबला पड़ा है दुनिया में आले रसूल<sup>स०अ०</sup> के साथी कम निकले और यह सिलसिला हमेशा जारी रहा। इसके वजूह इक्तेसादी (माली) भी हैं और सियासी भी। नफ़सियाती भी और नस्ली भी। यह पहले मालूम हो चुका है कि इस्लाम क़दीम इस्तेयाज़ात को मिटा कर मसावात (बराबरी) का पैग़ाम लेकर आया था और उसने इस्तेयाज़ सिर्फ़ फ़राएज़े इन्सान की ज़्यादा से ज़्यादा बजा आवरी (अमल) की बिना पर क़रार दिया था। मुशतरिका दौलत (मिल्लत की दौलत) जो माले ग़नीमत से हासिल होती है उसकी इस तरह तक्सीम कि जिसमें जानिबदारी (यिकतरफ़ा) और अदमे मसावात (ना इन्साफी) पैदा हो जाये इस्लाम के उसूल के ख़िलाफ़ थी और इस्लाम के सच्चे मुहाफ़िज़ीन उसके क़रीब न जा सकते थे। इसलिये आले रसूल<sup>स०अ०</sup> के लिये यह नामुमकिन था कि वह ख़ज़ाने में रुपये जमा करके दौलतमन्द बनें और खुसूसियत से उन लोगों को ज़र व जवाहर से माला माल करें जिनसे उनको अपने एक़तेदार के क़वी बनाने में फ़ाएदे की उम्मीद हो। यहाँ तो यह आलम था कि हज़रत अली बिन अबी तालिब<sup>अ०स०</sup> जो कुछ बैतुल माल में आता है रोज़ का रोज़ तक्सीम कर देते हैं और फिर बैतुल माल में झाड़ू दिलवा देते हैं और वहीं पर नमाज़ पढ़ते हैं कि वह ज़मीन खुदा के यहाँ गवाही दे कि अली<sup>अ०स०</sup> ने मुसलमानों के माल के पहुँचाने में मुस्तहक़ लोगों तक दरेग नहीं किया।<sup>7</sup>

इसफ़हान से माल आता है। उस वक़्त इत्तेफ़ाक़ से सात आदमी साहबे इस्तेहकाक़ (ज़रूरत मन्द) मौजूद हैं। आपने तमाम माल के सात

7 इस्तीआब जि/2, पेज/478

बराबर हिस्से कर दिये और एक रोटी भी उस माल में नज़र आ गई तो उसके भी सात टुकड़े करके हर हिस्से में एक टुकड़ा रख दिया। मुमकिन है खयाल किया जाये कि ऐसी छोटी छोटी बातों का आदमी को लिहाज़ नहीं करना चाहिये और उस रोटी को किसी एक हिस्से में शामिल कर दिया जाता तो ब-ज़ाहिर शरीअत के मुताबिक कोई जुर्म न था मगर याद रखना चाहिये कि ज़हनियते अवाम की तशकील इन ही छोटी छोटी बातों से होती है। हज़रत अली<sup>अ०स०</sup> तो अवाम की ज़हनियत उसी मसावात के साँचे में ढालने का काम अन्जाम दे रहे थे जिसे रसूल<sup>स०अ०</sup> ने सिखाया था और मुसलमान रसूल<sup>स०अ०</sup> की रेहलत के बाद उसे भुला बैठे थे।

उसके बर ख़िलाफ़ अमीरे शाम के यहाँ इन बातों की कोई परवा न थी। वहाँ अपने एकतेदार के कायम रखने के लिये खज़ाने का मुँह खुला था और जिसको मतलब का समझा जाता था उसे माला माल कर दिया जाता था। फिर लोग जो इस्तेयाज़ात के आदी हो चुके थे इनका साथ देते या उनका।?

दुनिया की तो यह हालत है कि चाहे मिले मिलाए कुछ नहीं लेकिन अगर मालूम हो कि किसी के पास रुपया बहुत है और खज़ाने में दौलत जमा है तो यही उसका असर कायम होने के लिये काफ़ी होता है। और इसी तरह उसकी साख़ कायम हो जाती है। यहाँ हज़रत अली<sup>अ०स०</sup> की यह कैफ़ियत कि मिम्बर पर अपनी तलवार के फ़रोख़्त का ऐलान करते हैं और बतलाते हैं कि मुझे एक लिबास की ज़रूरत है जो बग़ैर इस तलवार के फ़रोख़्त किये हुए मुमकिन नहीं है। अब्दुर रज़्ज़ाक मुहद्दिस ने इस रिवायत को नक्ल करके लिखा है कि यह उस हालत में था कि जब

सिवा शाम के तमाम आलमे इस्लाम की सलतनत आपके कब्ज़े में थी।<sup>8</sup> हर एक हरीस शख्स समझता था कि जिसके पास खुद अपने लिबास के लिये रुपया न हो उसके पास नाहक किसी दूसरे को देने के लिये रुपया कहाँ हो सकता है।

दुनिया ज़ाहरी तमतिराक (चमक दमक) और आओ भगत से भी मरऊब होती है मगर यहाँ यह हालत थी कि जनाबे अमीर<sup>अ०स०</sup> अपनी हुकूमत के ज़माने में कभी इसको आर न समझते थे कि मीसमे तम्मार की दुकान पर ख़रीद व फ़रोख़्त करें। बाज़ार में कम्बर को साथ ले कर गए और दो पैराहन (लिबास) ख़रीद किये। एक सात दिरहम का और एक पाँच दिरहम का। सात दिरहम का पैराहन कम्बर को दिया और पाँच दिरहम का खुद जेबे बदन किया। कम्बर ने कहा यह ज़्यादा कीमत वाला आप लें। कोई और होता और वह ऐसा करता तो शायद जवाब देता कि मैं मसावात के फ़ैलाने और गुलामों का दर्जा बलन्द करने के लिये ऐसा करता हूँ। अली<sup>अ०स०</sup> का मकसद यकीनन ऐसा ही था लेकिन अगर यह जवाब देते तो इसमें खुद अदमे मसावात (ना इन्साफ़ी) का पहलू मुज़मर (छुपा) था। सुनने वाले को एहसासे गुलामी ज़रूर पैदा हो जाता इसलिये आपने ऐसा जवाब दिया जो अपने बच्चों को दिया जाता है। फ़रमाया कम्बर! तुम नौ उम्र हो, तुम्हें वही पैराहन अच्छा मालूम होता है। मेरा क्या, मैं यही पहन लूँगा। इन बातों की कद्र अहले दुनिया कहाँ कर सकते थे और उनके दिल पर इन बातों का असर कहाँ कायम हो सकता था।

इसके अलावा इस्लाम ने उन तमाम मुक़तदर

8 इस्तीआब जि/2, पेज/478

अशखास (बड़े लोगों) और जमाअतों के इस्तेयाज़ात को ख़त्म किया था जो उसके पहले बर सरे एक़तेदार थीं। वह मुक़तदर जमाअतें (दौलत मन्द) आपस में कितनी ही रकीबाना चश्मक (दश्मनी) रखती हों लेकिन इस्लाम से ज़ख़्म खुर्दा (हार मानी हुई) वह सब ही थीं। इसलिये इस्लाम के हकीकी मक़सद और कायम कर्दा इस्तेयाज़ के मिटाने में वह सब हम आहन्ग (एक आवाज़) बन सकती थीं क्योंकि उसके मिटाने में उनमें से हर एक के एक़तेदारे रफ़ता (हुकूमत में) की वापसी मुन्हसिर थी और फिर साबिक की शिकस्तों का असर सब ही पर था और सब ही में जज़्बा-ए-इन्तेक़ाम पाया जाता था। फिर यह भी कि इस्लाम ने अपने उसूल मसावात की तलकीन (नसीहत) से खुद कौमे अरब का ब-हैसियते कौम भी इस्तेयाज़े खास ख़त्म किया था। और परदेसियों के हुकूक पर बड़ा जोर दे दिया था और ग़ैर अरबी अनासिर (लोग) जो आते थे उन्हें अरबों के बराबर हुकूक दिये जाते थे। यह बात तमाम अरब ही को खलने की थी। बनी उमय्या ने अपने दौर में अरबी तअस्सुब (हसद) का मुज़ाहरा करके अरबी कौमियत के इस्तेयाज़ की हिमायत की और मवाली और आजाम (अजम की जमा ईरानी नस्ल) की कोर (ज़ोर को) दबाने की कोशिश की। चुनानचे इस दौर के इस्तेयाज़ी खुसूसियात में से यह है कि अरब और ग़ैरे अरब का सवाल पैदा हो गया। बनी उमय्या की इस सियासी रविश का कुदरतन यह नतीजा होना चाहिये था कि अरब ज़्यादा तर बनी उमय्या के तरफ़दार हो जाते। बनी हाशिम इस्लामी उसूल के हामी होने की वजह से अरबी कौमियत के इस जज़्बे की तरफ़दारी नहीं कर सकते थे। इसलिये उनका अरब की

जानिब दारी का पहलू कमज़ोर था। इसकी तस्दीक़ इससे हो सकेगी कि उसके बाद जब बनी उमय्या के ख़िलाफ़ हाशेमियैन यानी बनी अब्बास वग़ैरह ने अलम बलन्द किया तो हाशिमियैन का साथ देने वाले मवाली और अजम ज़्यादा थे।

बनी हाशिम के क़दीमी रिवायात और सयादत (बुजुर्गी) व शराफ़त के इस्तेयाज़ की वजह से अरब ख़ानदानों को उनसे पहले ही हसद व एनाद था। इसलिये नस्ली तअस्सुबात भी मुख़ालिफ़त पर आमादा करते थे और अरब में क़बाइली निज़ाम बड़ी कुव्वत के साथ कायम था। हर क़बीले के सरगरोह (सरदार) और बड़े अफ़राद अपने जज़्बात की बिना पर जिस रास्ते पर जाते थे अवाम और पस्त अफ़राद अहले क़बीला भी उन ही की पैरवी करते थे क्योंकि अवाम का कोई नज़रिया नहीं हुआ करता। वह लीडरों के पाबन्द होते हैं और लीडर ज़्यादातर जज़्बात के शिकन्जे में कैद होते हैं। इन्हीं बातों का नतीजा था कि आले रसूल के मुक़ाबले में उनके मुख़लेफ़ीन की तादाद ज़्यादा रहती थी।

## नवाँ बाब

हसने मुजतबा<sup>अ०स०</sup> की सुल्ह और उसके नताएज

सन<sup>40</sup> हिजरी (से) सन 60 हिजरी

इन्तेक़ाल फ़रमाने से पहले हज़रत अली बिन अबी तालिब<sup>अ०स०</sup> ने एक तहरीरी वसीयत नामा इमाम हसन<sup>अ०स०</sup> के नाम लिखा और उस पर इमाम हुसैन<sup>अ०स०</sup> और मोहम्मद बिन हन्फ़िया और अपनी दीगर औलाद, अइज़्ज़ा और मख़सूस असहाब की गवाहियाँ लिखवाई और वसीयत नामा हसने मुजतबा<sup>अ०स०</sup> को सिपुर्द करते हुए



फरमाया कि दुनिया से रूख़सत होते वक़्त तुम इसे हुसैन<sup>अ०स०</sup> के सिपुर्द कर देना।<sup>9</sup> इसके अलावा एक वसीयत आपने हसन और हुसैन<sup>अ०स०</sup> दोनों भाईयों से मुशतरक तौर पर फ़रमाई वह यह थी कि “मैं तुमको फ़र्ज शनासी की वसीयत करता हूँ और यह कि तुम कभी दुनिया के तलबगार न होना, चाहे वह दुनिया खुद तुम्हारी तलबगार हो, और किसी दुनयवी नुक़सान पर कभी रंजीदा न होना और हमेशा हक़ के लिये ज़बान खोलना और सवाब के लिये काम करना और ज़ालिम के मददे मुकाबिल और मज़लूम के मददगार रहना।<sup>10</sup> मैं तुमको अपनी तमाम औलाद और अइज़ज़ा और उन लोगों को जिन तक मेरा पैग़ाम पहुँचे वसीयत करता हूँ कि हमेशा खुदा से डरते रहना और अपने षीराज़े को मुन्तशिर न होने देना और अपने दरमियान झगड़ों को सुलह व आशती के साथ तय करते रहना और देखो यतीमों का ख़याल रखना, उनकी ख़बर गीरी करते रहना और पड़ोसियों का ख़याल रखना इसलिये कि रसूल अल्लाह ने उनके बारे में वसीयत की थी, और देखो कुरआन का ख़याल रखना, तुम से बढ़कर कोई कुरआन पर अमल करने वाला न हो, और नमाज़ का ख़याल रखना, यह तुम्हारे दीन का सुतून है। और अल्लाह के घर (ख़ाना-ए काबा) का ख़याल रखना। ज़िन्दगी भर उसको कभी एकेला न छोड़ना, और देखो खुदा की राह में अपने जान व माल और ज़बान से जेहाद करते रहना। और आपस में सिल-ए-रहेमी (नर्म दिली) रखना, और एक दूसरे के साथ फ़य्याज़ी के साथ पेश आना और देखो कभी ख़ल्फ़े खुदा को नेक आमाल की तरगीब देने और बद आमालियों से रोकने

से बाज़ न आना ताकि तुम पर बुरे लोगों का एकतेदार कायम न होने पाये।<sup>11</sup> और देखो मेरे बाद ऐसा न होने पाये कि बनी हाशिम मुसलमानों में मेरे खून के बहाने से ख़ूरेज़ी शुरू कर दें। ज़्यादा से ज़्यादा मेरे खून के किसान (बदला) के तौर पर बस मेरे कातिल को क़त्ल किया जा सकता है। और वह भी इस तरह कि उसको एक ज़रबत की पादाश (जुर्म) में बस एक ही ज़रबत लगाई जाये और उसको हरगिज़ मुसला (आँख, कान, वगैरह को अलग करना) न किया जाये। यानी आज़ा व जवारेह (जिस्म के हिस्सों को काटा न जाए) क़ता न किये जायें। इसलिए कि रसूल अल्लाह<sup>स०अ०</sup> फ़रमा गए हैं कि ख़बरदार किसी को मुसला न करो चाहे वह काटने वाला क़त्ता ही क्यों न हो।<sup>12</sup>

नफ़सियात के वाकिफ़कार ख़ूब जानते हैं कि कुछ वह हालात होते हैं जिनमें बात पत्थर की लकीर की तरह सुनने वाले के दिल पर जम जाती है। यह सूरत कि एक बुजुर्ग मर्तबा वाजिबुल इताअत बाप बिस्तरे बीमारी पर है। उसकी रेहलत का हंगाम करीब है और उस वक़्त वह अपने तमाम अहले बैत<sup>अ०स०</sup> में से दो एक सईद फ़रज़न्दों को खुसूसियत के साथ बुलाकर कोई ख़ास बात कहता है। यकीनन उस वक़्त की कही हुई बात उन फ़रज़न्दों के दिल व दिमाग़ पर ऐसा असर करेगी जैसा किसी दूसरे सब्रो सुकून के लमहों की बात असर नहीं कर सकती।

11 नहजुल बलागा जि/2, पेज/78.79, तबरी और अबुल फ़र्ज असफ़हानी ने उनमें से अक्सर फ़िक़रात को इमाम हसन<sup>अ०स०</sup> के नाम के तहरीरी वसीयत नामे में दर्ज किया है। मुकातिलुत तालिबीन पेज/25.27

12 तबरी जि/6, पेज/86, नहजुल बलागा जि/2, पेज/80

आम दुनिया से जाने वाले बाप उस वक्त अपनी औलाद से वसीयत अपने घर के निजी मुआमलात के मुतअल्लिक करते हैं मगर आले मोहम्मद<sup>स०अ०</sup> तो दीन व शरीयत, किताब और सुन्नत को अपने जातियात में दाखिल समझते थे। उन्होंने उस वक्त पर जो वसीयतें की हैं वह सरासर मफादे आम्मा, (आम लोगों के फाएदे) मफादे शरीयत और अहकामे इलाही से मुतअल्लिक थीं।

यूँ तो यह फरज़न्द वह थे जो खुद सही और मुनासिब ही काम करते मगर हज़रत अली इब्ने अबी तालिब<sup>अ०स०</sup> को तो ब—ज़ाहिर असबाब एक मुरब्बी (शफीक) बाप की तरह अपना फर्ज अन्जाम देना था। जिसका नतीजा यह होना चाहिये कि उन वसीयतों का हर हर लफ़्ज़ सआदत शेयार (लाएक मन्द) बेटों के दिल पर नक्श हो जाये। यह अलफ़ाज़ उनके कानों में हमेशा गूँजते रहें कि फर्ज शनासी को अपना उसूल रखना। दुनयवी जाह व इक़तेदार के कभी तालिब न होना। दुनयवी नुक़सान की कभी परवाह न करना। ज़बान पर हक़ को जारी रखना। ज़ालिम के मददे मुकाबिल रहना और मज़लूमों के मददगार रहना। चुनौनचे इन तमाम तालीमात को दोनों फरज़न्दों ने अपने अमल से मुजस्सम शक़ल में पेश किया और आपस में हमआहंगी को भी हर सूरत में बरकरार रखा।

यह अलफ़ाज़ कि “खुदा की राह में अपने जान व माल और ज़बान से जिहाद करते रहना अम्नबिल मारुफ़ और नही अनिल मुन्कर (अच्छी बातों की हिदायत और बुरी बातों से ममानियत) को कभी तर्क न करना। ऐसा न हो कि तुम पर बुरे लोगों का इक़तेदार कायम हो जाये।”

खुसूसियत के साथ उनको अमली जामा पहनाने का जिस तरह हुसैन<sup>अ०स०</sup> को मौका मिला वह दुनिया की तारीख़ में यादगार है।

हज़रत अली इब्ने अबी तालिब<sup>अ०स०</sup> की वफ़ात के बाद तमाम मुसलमानों ने मुत्तफ़िका तौर पर आपके बड़े फ़रज़न्द इमाम हसन<sup>अ०स०</sup> की खिलाफ़त तस्लीम की। आप पर अपने वालिदे बुजुर्गवार की शहादत का बड़ा असर था। आपने इस मौके पर जो खुत्बा इरशाद फ़रमाया उसमें हज़रत अली बिन अबी तालिब<sup>अ०स०</sup> के फ़ज़ाएल व मनाकिब तफ़सील के साथ बयान करते हुए खास तौर पर आपकी सीरत और तर्क दुनिया का तज़क़िरा किया और उस ज़िक़्र में गिरया आपके गुलूगीर हुआ और तमाम हाजेरीन भी आपके साथ बे—इख़्तियार रौने लगे। फिर आपने अपने जाती और खानदानी फ़ज़ाएल बयान किये। उसके बाद अब्दुल्लाह बिन अब्बास ने खड़े होकर लोगों को आपकी बैयत करने की तरफ़ दावत दी। और सबने ब—रज़ा व रग़बत आपकी बैयत की। यह जुमा के दिन 21/माहे रमज़ान सन 40 हिजरी का वाक़ेया है।<sup>13</sup> आपने उसी वक्त लोगों से साफ़ साफ़ यह कौल व क़रार ले लिया था कि अगर मैं सुलह करूँ तो तुमको सुलह करना होगी और अगर मैं जंग करूँ तो तुम्हें मेरे साथ जंग करना होगी। उसके बाद आप मुल्क के बन्दोबस्त की तरफ़ मुतवज्जेह हुए। अतराफ़ में उम्माल (हुकूमत का काम संभालने वाले) मुकर्रर किये। हुक्काम मुऐय्यन किये और मुक़द्दमात के फ़ैसले करने लगे।

अभी मुल्क हज़रत अली<sup>अ०स०</sup> के ग़म में सोगवार ही था और हज़रत इमाम हसन<sup>अ०स०</sup> पूरे तौर पर इन्तेज़ामात भी न कर चुके थे कि मुआविया

13 इरशाद पेज/192

की तरफ़ से आपकी ममलिकत में दरअन्दाज़ी शुरू हो गई और उनके खुफ़िया कारकुन (जासूस) रीशी दवानियाँ (मक्कारियाँ) करने लगे। चुनौतियों के एक शख्स कबील-ए-हुमैर का कूफ़े में और एक शख्स बनी कैन में से बसरा में पकड़ा गया। यह दोनों इस मकसद से आये थे कि यहाँ के हालात से दमिश्क़ में इत्तेला दें और फ़िज़ा को इमाम हसन<sup>अ०स०</sup> के खिलाफ़ ना-खुशगवार बनायें। ग़नीमत है कि इसका इन्क़ेशाफ़ (पर्दाफ़ाश) हो गया। हमीर वाला आदमी कूफ़े में एक क़साई के घर से और कैन वाला आदमी बसरा में बनी सुलैम के यहाँ से गिरफ़्तार किया गया और दोनों को जुर्म की सज़ा दी गई। इस वाक़ये के बाद हज़रत इमाम हसन<sup>अ०स०</sup> ने मुआविया को एक ख़त लिखा जिसका मज़मून यह था कि “तुम अपनी दरअन्दाज़ियों से बाज़ नहीं आते हो। तुमने लोग भेजे हैं कि मेरे मुल्क में बगावत पैदा करायेँ और अपने जासूस यहाँ फैला दिये हैं। मालूम होता है कि तुम जंग के ख़्वाहिशमन्द हो। ऐसा है तो फिर तैयार रहो। यह मन्ज़िल कुछ दूर नहीं है नीज़ मुझको ख़बर मालूम हुई है कि तुम ने मेरे बाप की वफ़ात पर तान व तशनीज़ के अलफ़ाज़ कहे। यह हरगिज़ किसी जीहोश (अक्लमंद) आदमी का काम नहीं है। मौत सबके लिए है। आज हमें इस हादिसे से दो चार होना पड़ा तो कल तुम्हें होगा। और हकीक़त यह है कि हम अपने मरने वाले को मरने वाला समझते नहीं। वह तो ऐसा है जैसे कोई एक मकान से मुन्तक़िल होकर अपने दूसरे मकान में जाये और आराम की नींद सोए।” इस ख़त के बाद मुआविया और इमाम हसन<sup>अ०स०</sup> के दरमियान बहुत से खुतूत की रद्दो बदल (अदला बदली) हुई।<sup>14</sup> बहरहाल

इन वाक़ेआत से यह अम्र बिल्कुल ज़ाहिर हो गया कि अमीरे शाम मुआविया को जनाबे अमीर<sup>अ०स०</sup> की ज़ात से कोई वक्ती अदावत नहीं थी वरना वह उनकी शहादत के साथ ख़त्म हो जाती बल्कि यह आले रसूल<sup>स०अ०</sup> से एक मुस्तक़िल दुश्मनी है जिसके नताएज आइन्दा देखिये क्या हों। यह भी इस वाक़ये से साबित हो गया कि मुल्क में दुश्मन के जासूसों और मुख़बिरों के लिए जाये पनाह मौजूद है और अगर दो एक वाक़ेआत का इन्क़ेशाफ़ हुआ और दो आदमी गिरफ़्तार हो गए तो यह यकीन नहीं किया जा सकता कि ऐसे ही कुछ दूसरे लोग मौजूद नहीं हैं जिनका इन्क़ेशाफ़ नहीं हो सका है और जिन्हें काफ़ी काम करने का मौक़ा मिल रहा है। बहरहाल इमाम हसन<sup>अ०स०</sup> दुश्मन के मुक़ाबले के लिए तैयार थे और हक़ के बारे में उसके साथ कोई मुराआत (रेआयत) करने पर आमादा न थे। बेशक आपको और आपके साथ हुसैन<sup>अ०स०</sup> को अपने मुल्क की फ़िज़ा की तरफ़ बेइतमिनानी ज़रूर थी। इसलिए कि ख़वारिज (हज़रत अली<sup>अ०स०</sup> के दुश्मन) के फ़ितने के बाद से खुद अहले कूफ़ा में फूट पड़ चुकी थी और बहुत से लोग ऐसे भी थे जो ब-ज़ाहिर हज़रत अली<sup>अ०स०</sup> की फौज में शामिल थे मगर क़राबत और दोस्ती या किसी और वजह से ख़वारिज के साथ हमदर्दी रखते थे। हज़रत अमीर<sup>अ०स०</sup> को खुद उन लोगों की शोरिश पसन्दी, एख़्तेलाफ़े राय और नज़्म (इत्तेहाद) की कमी से इतनी तकलीफ़ और परीशानी थी कि आप मौत के आरज़ूमंद थे। तमाम कुतुबे तारीख़ (इतिहास की किताबों) और बिल-खुसूस नहजुल बलागा में वह खुत्बे आपके दर्ज हैं जो आपकी कबीदा खातिर (रंजीदा) बल्कि रुहानी तकलीफ़ के मज़हर हैं। आपने उनको मुख़ातब करके कभी फ़रमाया

14 इरशाद पेज/192.193

कि तुम ने मेरा दिल पीप से भर दिया और मेरे सीने को ग़म व गुस्से से पुर कर दिया।<sup>15</sup> कभी फ़रमाया कि काश मुआविया मेरे साथ अपनी जमाअत का तुम्हारी जमाअत (साथियों) से तबादला (बदल) कर लेता। इस तरह जैसे सोने के सिक्के का तबादला चाँदी के सिक्के से होता है। यानी तुम में से दस ले लेता और अपनों में का एक मुझे दे देता।<sup>16</sup> कभी फ़रमाया, कितने अफ़सोस की बात है कि अहले शाम बातिल रास्ते पर मुत्तफ़िक् हैं और तुम हक् रास्ते पर हो के बाहम तआवुन (एक दूसरे का साथ) नहीं रखते।<sup>17</sup> अहले शाम अपने हाकिम की इताअत करते हैं दर्राहालेकि वह खुदा की नाफ़रमानी करता है और तुम अपने इमाम का कहना नहीं मानते दर्राहालेकि वह खुदा की इताअत करता है।<sup>18</sup> और कभी फ़रमाया कि तुम लोगों से कहा जाता है कि जिहाद के लिए चलो जाड़े के ज़माने में तो तुम कहते हो कि यह कड़ाके का जाड़ा है हमें इतनी मोहलत दीजिये कि यह सर्दी कम हो जाये और जब तुम से कहा जाता है गर्मी के ज़माने में तो कहते हो कि यह तो तड़ाके की गर्मी है। इतनी मोहलत दीजिये कि यह गर्मी कम हो जाये। अफ़सोस! तुम गर्मी और सर्दी से इतना भागते हो तो तलवार की आँच से और ज़्यादा भागोगे।<sup>19</sup> यही वह जमाअत थी कि जिससे अब इमाम हसन<sup>अ०स०</sup> को साबिका पड़ा था। आप उन

15 अख़बारुत तुवाल पेज/214, नहजुल बलागा जि/1, पेज/78

16 इरशाद पेज/164, नहजुल बलागा जि/1, पेज/205

17 इरशाद पेज/148, नहजुल बलागा जि/1, पेज/72

18 इरशाद पेज/164, नहजुल बलागा जि/1, पेज/205

19 अख़बारुतुवाल पेज/214, इरशाद पेज/151, नहजुल बलागा पेज/77

लोगों की हालतों से अच्छी तरह वाकिफ़ थे और यकीनन अमीरे शाम को भी अपने जासूसों के ज़रिये से यहाँ के हालात का इल्म हो गया होगा और वह यह भी समझते होंगे कि अमीरुल मोमिनीन हज़रत अली<sup>अ०स०</sup> की जो हैबत तमाम अरब के कुलूब (दिलों) पर छाई हुई थी वह बिल्कुल उसी दर्जे पर हज़रत हसन<sup>अ०स०</sup> के लिए अभी हासिल नहीं हो सकती इसलिए उन्हें हिम्मत हुई कि वह यकायक इराक़ पर हमला कर दें। चुनौनचे वह अपनी फ़ौजों को लेकर जसरे मुनहज तक पहुँच गए। अब इमाम हसन<sup>अ०स०</sup> ने भी मुदाफ़िअत (बचाओ) के इन्तेज़ामात शुरू किये और हुज़्र बिन अदी को भेजा कि वह दौरह करके तमाम मुक़ामात के आमिलों को सूरते हाल का मुक़ाबिला करने पर अमादा करें और लोगों को जिहाद के लिए तैयार करें। मगर अन्दाज़े के बिल्कुल मुताबिक़ यह अफ़सोसनाक सूरत सामने आई कि लोगों ने हुज़्र बिन अदी की कोशिश का गर्म जोशी के साथ इस्तेक़बाल नहीं किया। आम तौर पर जमूद और सर्द मुहरी (बेहिशी) से काम लिया गया। कुछ थोड़ी सी जमइयत मुक़ाबले के लिए तैयार हुई थी तो उसमें कुछ हिस्सा ख़वारिज का था जो किसी न किसी हीले से मुआविया से जंग करना ही चाहते थे। कुछ शोरिश पसन्द और माले ग़नीमत के तलबगार और कुछ लोग सिर्फ़ अपने सरदाराने कबाएल के दबाव से बा—दिले ना—ख़्वास्ता (ना चाहते हुए) साथ हो गए थे। जिन्हें फ़र्ज़ के एहसास से कोई वास्ता न था। थोड़े लोग वह होंगे जो वाक़ेई हज़रत अली<sup>अ०स०</sup> और इमाम हसन<sup>अ०स०</sup> के शिया समझे जा सकते हैं।<sup>20</sup> बहरहाल हज़रत हसन<sup>अ०स०</sup> ने कैस बिन सअद बिन (बक़िया पेज नं० 16 पर.....)

20 इरशाद पेज/193

## पैग़म्बर का अख़लाक़

आयतुल्लाहिल उज़्मा सैय्यदुल उलमा सै० अली नकी नक्वी

ये हज़रते अहदियत (अल्लाह) का इरशाद है अपने हबीबे खास सरदार अम्बिया हज़रते मोहम्मदे मुस्तफ़ा (स.अ.व.व.) को मुख़ातिब करके यकीनन तुम एक बड़े ख़ल्क के दरजे पर हो।

ये सनद ख़ालिफ़ की तरफ़ से पैग़म्बर के कमाले अख़लाक़ की, और होना भी चाहिए क्योंकि पैग़म्बर वो था जो नौए इन्सानी की तकमील के लिए सब से आख़िरी नमूना था। यानि जितनी जितनी बशरियत की तरक्की होती रही उतनी कामिल मिसाल पेश की जाती रही।

एक लाख चौबीस हज़ार अम्बिया की तालीमी मिसालों के बाद जब आप (हमारे पैग़म्बर स०) को ख़ातेमुन्नबियीन बनाकर भेजा तो ज़रूरी है कि आप कमाले इन्सानी का बेहतरीन मुजस्समा हो, वरना कुदरत का इन्तिखाब ग़लत होगा, मक्सदे तालीम हासिल न होगा। नाकिस नमूने सामने आकर ख़ल्क की निगाह में पस्ती पैदा होगी जिस से ख़लिफ़ के कमाले जात पर धब्बा आएगा, इसलिए ज़रूरत हुई कि आख़िरी मुअल्लिम और रहबर ऐसा ही हो जो कमाले इन्सानी की आख़िरी मन्ज़िल पर होता कि उसको देखकर आलमे इम्कान के अफ़राद हर उस नुक़्ते पर पहुँच सकें जिस तक इम्कान के ज़र्फ़ में सलाहित है और जहाँ तक पहुँचाना इस काएनात के ख़लिफ़ को मद्दे नज़र हो सकता है।

इसलिए जहाँ कुरआन ने आपके आख़िरी मुअल्लिम होने का पैग़ाम सुनाया, इन अल्फ़ाज़ में कि मा काना मुहम्मदुन अबा अहादिम मिर रिजालिकुम वलाकिन रसूलल्लहि व ख़ातमन नबियीन (सूरए एहज़ाब आयत नं० 40) इसी के साथ आपके कमाले अख़लाक़ की गवाही दी इन अल्फ़ाज़ में कि, **इन्नका लअला ख़ुलुकिन अज़ीम**

“ तुम बड़े ख़ल्क के दरजे पर फ़ाएज़ हो। ”

(सूरए कलम आयत नं०-4)

ये ऐसी सनद है जिससे बढ़कर कोई सनद नहीं हो सकती। मालूम होना चाहिए कि अल्फ़ाज़ की क़दरो कीमत मुतकल्लिम के इख़तिलाफ़ से बदल जाती है। कोई छोटा शख्स अगर किसी चीज़ को अज़ीम कह दे तो ये उसकी हकीक़ी अज़मत की दलील नहीं, क्योंकि ये खुद छोटा, उसकी निगाह छोटी, उसका पैमाना ग़ौरो फ़िक़र छोटा, कोताह नज़र, इत्तेला महदूद, हौसला तंग, इसलिए हर ज़रा सी बड़ी चीज़ को ये बड़ा समझता और कह देता है। लेकिन अगर कोई बड़ा किसी शय को बड़ा कहे तो मालूम होगा कि ये वाकई कोई बड़ी चीज़ है। आलमे तसव्वुरो ख़्याल में ख़लिफ़ से बुजुरगो बरतर कोई हस्ती नहीं, फिर वह खुदा वन्दे अज़ीम अगर किसी शय को अज़ीम कह दे तो मानना पड़ेगा कि उस जिन्स की तमाम चीज़ों में उससे बढ़कर अज़ीम कोई नहीं।

अब आपको अन्दाज़ा हुआ कि रसूल के ख़ल्क को जो वह तकीदो तहकीक़ के साथ कह रहा है कि यकीनन ज़रूर बिज़्ज़रूर ये खुलके अज़ीम है तो इससे ये पता चलता है कि नौए बशर में अज़ आदम ता इख़ितामे आलम कोई ऐसा नहीं हुआ जो हमारे रसूल हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा (स.अ.व.व.) के मिस्ल ख़ल्क रखता हो।

ख़ल्क के मानी समझने में हमारे उरदू मुहावरे की बिना पर ज़रा धोखा होता है। हम जब ख़ल्क का लफ़ज़ सुनते हैं तो हमारा ज़ेहन मुन्तिक़िल होता है उस मफ़हूम की तरफ़ कि इंसान का बरताव दूसरों के साथ बहुत ख़क़साराणा हो, वो हर एक से झुककर मिले और तवाज़ो से पेश आए मगर अरबी ज़बान के मुहावरे में ख़ल्क के



मानी इतने ही नहीं हैं। इसका मफहूम बहुत ज्यादा वसी है, इंसानी औसाफ़ दो तरह के होते हैं एक वो जो उसके इराद व इख्तियार से मुताल्लिक नहीं है। जैसे ख़त व ख़ाल, शक़ल व शमाइल, रंग—रूप, क़दो क़ामत, ज़हानत, ज़कावत वगैरह। ये सिफ़तें जो कुदरती किसी में पाई जाती हैं उनको कहते हैं खुल्क़। दूसरी वो सिफ़तें होती हैं जिनके मातहेत इरादी अफ़आल अन्जाम पाते हैं। जैसे सच्चाई, अमानतदारी, फ़य्याज़ी वगैरह, इस तरह के औसाफ़ को खुल्क़ कहते हैं। ख़्वाह इफ़िरादी ज़िंदगी से मुताल्लिक हों, ख़्वाह इजतेमाई ज़िंदगी से। अब आपने ख़्याल किया कि रसूल को जो खुलके अजीम पर फ़ायज़ कहा गया है इसके मानी ये हैं कि ज़िंदगी के हर शोबे में आपके इल्मी कमाल की तसदीक़ की गई है और हकीक़त ये है कि आपकी अख़लाकी बलंदी एक ऐसे नुक़ता पर थी जहाँ दोस्त दुश्मन की गरदनें ख़म थीं। बचपने से आपकी सच्चाई और अमानतदारी का ये हाल था कि मुशरेकीन कुरैश ने आपका नाम रख लिया था सादिक़ ओर अमीन और आपको उन दोनों लक़बों के साथ मुलक्किब करके गोया आपकी रिसालत का पेशगी कलमा पढ़ लिया था। क्योंकि सादिक़ जो है उसका दावा झुटा कैसे हो सकता है? और जो अमीन हो वह पैग़ाम पहुँचाने में ख़यानत कब कर सकता है? आपको आपको सादिक़ और अमीन मानना इस अम्र का इक़रार था कि जो दावा आप करें वह सही है और जो पैग़ाम आप पहुँचाएं वह दुरुस्त है। ये और बात है कि जाती अग़राज़ सरे तस्लीम ख़म करने से सदे राह हों। लेकिन दिल का यकीन किसी के बस की बात नहीं। इसी लिए कुरआन ने साफ़ कह दिया है कि इन्होंने साफ़ इन्कार कर दिया है। (सूरए नम्ल आयत न.14) हालाँकि दिलों को उनके यकीन है वही कि जो आपके ख़िलाफ़ सर तोड़ कोशिश करते थे और आपकी सदा के ख़ामोश करने बल्कि आपकी हस्ती को फ़ना

करने का बेड़ा उठाए हुए थे, वही दिल से यकीन रखते थे कि ये सच्चे खुदा के रसूल हैं और आपकी अमानतदारी पर ईमान इतना मुस्तहक़म था कि वही लोग जो आपके ख़ुन के प्यासे थे और दुश्मन थे उनकी भी अमानतें आपके पास मौजूद थीं। उस वक़्त तक कि जब तक आपने मक्कए मुअज़्ज़मा से हिजरत फ़रमाई है और ये मुशरेकीन कुरैश की अमानतें ही थीं, जिनकी ख़ातिर आपने अपने इब्ने अम हज़रत अली—ए—मुरतज़ा (अ0) को अपनी जगह पर मक्के में छोड़ दिया और फ़रमाया कि जब तक मुशरेकीन की अमानतें वापस न कर लेना मेरे पास न आना। अली (अ.) ने जब अमानतें वापिस कर लीं जब मदीने तशरीफ़ ले गए। ये आपके इख़्लाक़ की मेकनातीसी कशिश ही थी जो दिलों को आपकी तरफ़ ज़ब्ब करती थी। एक तरफ़ मुरब्बत, तवाज़ो, हिल्म, तहम्मुल, अफ़व, करम, सख़ावत ये सिफ़तें आप पर ख़त्म थीं। दूसरी तरफ़ इस्तेक़लाल, सिबाते क़दम, जफ़ा कशी और कुव्वते क़ल्ब में अपना नज़ीर न था।

हुकूकुल्लाह एक तरफ़ अदा हो रहे थे और हुकूकुन्नास दूसरी जानिब। खुदा की इबादत इस तरह कि पाओं पर वरम आ गया। आख़िर आयत उतरी “ ए तय्यिबो ताहिर! हमने तुम पर कुरआन इसलिए नाज़िल नहीं किया है कि तुम इस क़दर तकलीफ़ बर्दाश्त करो।” (सूरए ताहा, आयत 1 व 2) दूसरों के साथ बर्ताव का ये आलम कि जिस से मुलाक़ात होती थी हज़रत खुद सलाम में इब्तेदा फ़रमाते थे। कुशादह पेशानी और बशाशत से गुफ़्तगु फ़रमाते, रास्ता चलने में पसे पुश्त से अगर कोई आवाज़ देता तो आप सिर्फ़ चेहरा उसकी तरफ़ मोड़कर देख लेना अख़्लाक़ के ख़िलाफ़ समझते बल्कि पूरे क़द से उसकी तरफ़ मुतवज्जे होते थे। आज हम में कोई बड़ा आदमी हो जाता है तो मुंह देखकर बात नहीं करता। अब्तेदा ब सलाम का क्या ज़िक़र, जवाबे सलाम में भी तकल्लुफ़ होता है मगर रसूल की अपनी

अज़मत के साथ ये हालत थी।

हज़रत की मसावात पसन्दी का ये आलम था कि मरजुल मौत में मिम्बर पर तशरीफ़ ले गए और फ़रमाया अगर मेरे हाथ से किसी को ईज़ा पहुँची हो तो वह अभी मुझसे बदला ले ले। सवादह बिन कैस मजमें में से खड़ा हो गया और अर्ज किया या रसूलल्लाह एक रोज़ आप नाक़े पर सवार तशरीफ़ लिये जा रहे थे आपके हाथ में ताज़ियाना था, मैं नाक़े के करीब से होकर गुज़रा, इस हालत में कि आप नाक़े को ताज़ियाना लगा रहे थे, वह ताज़ियाना मुझपर पड़ गया और मुझको उससे तकलीफ़ हुई मैं उसका किसास चाहता हूँ। हज़रत ने बिलाल से फ़रमाया कि जाकर हमारा ताज़ियाना ममशूक़ ले आओ। बिलाल गए अस्हाब में बेचैनी पैदा हो गई कि इस बीमारी की हालत में रसूलल्लाह(स.अ.व.व.) इस तकलीफ़ को कैसे बर्दाश्त करेंगे। सब समझा रहे हैं मगर सवादह किसी तरह रज़ामन्द नहीं होता। आख़िर ताज़ियाना आया। रसूल सलअम ने उसके हाथ में दे दिया। फ़रमाया कि भाई किसास ले ले। सवादह ने अर्ज किया। या रसूलल्लाह(स.अ.व.व.) जब आपने मेरे जिस्म पर ताज़ियाना लगाया था तो उस वक़्त मेरे जिस्म पर पैराहन न था। आपने बरैहना जिस्म पर ताज़ियाना लगाया था। ये सुनना था कि हज़रत ने पुश्ते मुबारक से लिबास को हटा दिया। जिसमे मुबारक का खुलना था कि सवादह ने बढ़कर मोहरे नुबुव्वत को बोसा दिया। कहा, क्या मजाल मेरी जो इस जिस्म से ताज़ियाना मस करूँ। अच्छा हुआ कि सवादह ने पहले अपने किसास से दर गुज़र न किया, दुनिया को मालूम तो हो गया कि हमारा पैग़म्बर अमल के किस नुक्ते पर है। वह जो कहता है उसे अमल की आख़िरी हद तक पहुँचा देता है। सवादह की निगाह में रसूल के जिस्म की इज़्ज़त थी। उसने पुश्ते मुबारक की ज़ियारत के बाद ये ज़ुरअत न की कि वह ताज़ियाने को मस करे। हाए अफ़सोस करबला वालों को कौन समझाए

कि हुसैन (अ.) का जिस्मे मुबारक जिसपर तलवारें और नैजे पड़ रहे हैं दर हकीक़त रसूल का प्यारा जिस्म है। मगर अफ़सोस उम्मतें रसूल ने उस जिस्म की कोई इज़्ज़त न की। तलवारों से टूकड़े कर डाला। (माखुज़ अज़ पयामे अमल, इमामिया मिशन लाहौर, पाकिस्तान, अक्टूबर 1957ई. स.4)



#### (बक़िया पेज नं० 13 का.....)

एबादह अन्सारी को बीस हज़ार की फ़ौज के साथ आगे रवाना किया और खुद मुक़ामे दैर कौब के करीब साबात में जाके क़याम किया। यहाँ पहुँच कर नुमायों तौर से आपको अपने साथियों की सर्द मुहरी का मुशाहिदा हुआ। आपने उन लोगों को जमा करके खुतबा इरशाद फ़रमाया जिसका मज़मून यह था कि “देखो मैं तमाम ख़ल्क से ज़्यादा ख़ल्के खुदा का बही ख़्वाह (बेहतर) हूँ और मुझे किसी मुसलमान से कीना नहीं। आगाह होना चाहिए कि इत्तेफ़ाक़ व इत्तेहाद चाहे तुम्हें नापसन्द हो इख़तेलाफ़ व इफ़तेराक़ से बेहतर है चाहे वह तुम्हें कितना ही पसन्द हो। याद रखो कि मैं तुम्हारे फ़ायदे के लिए तुम से बेहतर सोचने का हक़ रखता हूँ। तुमको लाज़िम है कि मेरी राय से इन्हेराफ़ और मेरे हुक्म की मुख़ालिफ़त न करो। आपकी तक़रीर का ख़त्म होना था कि मजमे में बद-नज़मी पैदा हो गई और ख़वारिज ने पुकार पुकार कर कहना शुरू किया कि यह काफ़िर हो गए, कुछ लोगों ने आप पर हमला करके आपके क़दमों के नीचे से मुसल्ला खींच लिया और दोशे मुबारक पर से चादर भी उतार ली। आप फ़ौरन घोड़े पर सवार हो गए और आवाज़े बलन्द से पुकारा कि कहाँ हैं रबीआ और हमदान। यह दोनों क़बीले इधर उधर से दौड़ पड़े और शोरिश पसन्दों को आपसे दूर किया।<sup>21</sup>

21 इरशाद पेज/194

## मुख्य समाचार

### यहूदी अपने को सहयूनी दहशत गर्दों से अलग कर लें जंग शुरू होने की सूरत में फ़िलिस्तीन छोड़ने का मौका तक नहीं मिलेगा: सै0 हसन नसरुल्लाह

अहलेबैत न्यज़ एजेंसी अबना की रिपोर्ट के मुताबिक, हिज़्बुल्लाहे लबनान के जनरल सिक्रेटरी जनाब हुज्जतुल इस्लाम सै0 हसन नसरुल्लाह ने इस साल भी यौमे आशूर वीडियो कॉफ्रेंस के तवस्सुत से अज़ादाराने हुसैनी से ख़िताब किया और कहा :

दाइश उम्मत मुस्लिमा के लिए खड़ा किया गया शदीद तरीन और संजीदा तरीन खतरा है। देख लीजिए कि उसने इलाक़े को कितना बड़ा नुक़सान पहुंचाया है और किस क़दर आलमी सत्ह पर इस्लाम और रसूले इस्लाम(स0) के चेहर-ए-मुबारक को बिगाड़ कर दुनिया वालों के सामने पेश किया है। देख लीजिए इस टोले ने अमरीका और इस्राईल के मनसूबों की किस क़दर ख़िदमत की है!

आज मैं एलान करता हूं कि दाइश और जुल्मो फ़साद के ख़ात्मे के लिए जहां भी ज़रूरत पड़े, जंग को जारी रखेंगे। मुसलमानों और ख़ित्ते के ममालिक और और कौम और समाज को देख लेना चाहिए कि दाइश बनाई किसने है, कौन उसको माली और असकरी इमदाद फ़राहम कर रहा है? उन अफ़राद और कौमों को पहचान लेना चाहिए। लाखों अफ़राद मारे गए हैं, इस्लाम का चेहरा बिगाड़ा जा चुका है और यूं रसूल(स0) की बिगड़ी हुई तसवीर दुनिया वालों के सामने पेश की गई है। इस मसअले के पसे पर्दा अवामिल और कौमों को बे नकाब करना चाहिए और उनकी बाज़ ख्वास्त पर इसरार होना चाहिए। उन जराएम के पसे पर्दा कुव्वतों के चेहरे से नकाब खींच लेना चाहिए। पूरी दुनिया के मुसलमान उनके उलमा और दानिश वरों को इस सिलसिले में कॉफ्रेंसों का इन्फ़काद करना चाहिए ताकि वह इस नारिरुल ज़हूर शय(तकफ़ीरी वहहाबियत)को पहचान लें ताकि यह शय दोबारा फिर किसी और ज़माने और किसी और मुल्क में न दोहराई जाए। आज-कल एक बार फिर सैहयूनी रियासत की तरफ़ से धमकी आमोज़ बयानात सामने आ रहे हैं लेकिन हम सहयूनी दुशमन को आगाह करते हैं और मक़बूज़ा सर ज़मीन में आ बसने वाले यहूदियों को भी ख़बरदार करते हैं कि अपने मुक़द़रात सहयूनी रियासत के सुपुर्द करें। इस्राईल लबनान को धमकी देने में कोई दकीका फ़रो-ए-ज़ाशत नहीं करता उसने शिमाली ब्रिगेड की जंगी मश्कों से क़बूल और उसके बाद जबकि वह शाम पर अपनी जारेहियत का जवाज़ पेश कर रहा था और हिज़्बुल्लाह की तक्वियत के लिए नए वसाइल पहुंचने का ख़तरा बतौर बहाना पेश कर रहा था लबनान की फ़ज़ाई हदबंदी की ख़िलाफ़ वर्जी का सिलसिला भी जारी रखा और उसकी कोशिश है कि जंग को लेबनान की तरफ़ खींच लाए।

अगर जंग शुरू हो जाए तो इस्राईल उसकी दुरुस्त तशख़ीस नहीं कर सकेगा

मैं इस्राईल को ख़बरदार करता हूं कि हमने महाजे मुज़ाहिमत में इब्तिदा ही से एलान किया है कि हमारी अस्ल जंग सहयूनी ग़ासिबीन के साथ है। हमारी जंग एक आसमानी दीन के पैरोकार यहूदियों के ख़िलाफ़ नहीं है। सहयूनी तहरीक ने यहूदियों से ग़लत फ़ाइदा उठाया है ताकि फ़िलिस्तीन में नव आबादियाँ बनाने के ग़ासिबाना मनसूबे को पाय-ए-तकमील तक पहुंचाए। यहूदी ख़ित्ते के अरब अवाम के ख़िलाफ़ नई अमरीकी जंग का ईंधन हैं।